मोहे पनघट पे नंदलाल छेड़ गयो रे...

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

25 दिसंबर महान संगीतकार नौशाद साहब का जन्मदिन है,भारतीय फिल्म संगीत के इतिहास में जिन संगीतकारों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को फिल्मों के जरिये जन जन तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, उनमें नौशाद साहब का नाम सबसे ऊपर है. नौशाद उन संगीतकारों में थे, जिन्होंने अपने संगीत में शास्त्रीय रागों, लोक संगीत और पश्चिमी वाद्यों का इस संतुलन और कुशलता से प्रयोग किया कि संगीत के विद्वानों से लेकर आम श्रोता तक सब उनके मुरीद बन गए. बचपन से ही उन्हें संगीत में गहरी रुचि थी, परन्तु उनके घर में संगीत पर पाबंदी थी.ऐसे में नौशाद ने संगीत तो नहीं छोड़ा, पर संगीत के लिए घर जरूर छोड़ दिया और मुंबई भाग गए. यहाँ उन्होंने मशहूर उस्ताद झंडे ख़ाँ से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली और धीरे-धीरे फिल्म संगीत की दुनिया में अपनी जगह बनाई .

नौशाद ने 1940 के दशक में बतौर संगीतकार अपनी पहचान बनानी शुरू की. प्रारंभिक संघर्ष के बाद उन्हें 1944 में आई फिल्म रतन से अभूतपूर्व सफलता मिली. इस फ़िल्म के लिये नौशाद को सिर्फ 8 हज़ार रूपये की राशि मिली थी,परन्तु इस फिल्म के गीतों ने लोकप्रियता के नए मानक स्थापित किए और नौशाद को एक बड़े संगीतकार के रूप में स्थापित कर दिया. इस फ़िल्म के जोहरा बाई अम्बाले वाली, अमीर बाई कर्नाटकी, करन दीवान और श्याम आदि के गाए गीत अखियाँ मिलाके , जब तुम ही चले परदेस , अंगड़ाई तेरी है बहाना , ओ जानेवाले बालमवा अत्यंत लोकप्रिय हुए.

नौशाद अपने घर से भागकर बम्बई आए थे. लेकिन जब नौशाद के वालिद को पता चला कि वे संगीतकार बन गए हैं तो वो नाराज हो गए और फिर नौशाद की शादी करवाने में लग गए. लड़की वालों को यह नहीँ बताया गया कि लड़का संगीतकार है बल्कि यह बताया गया कि नौशाद दर्जी का काम करते हैं. हद तो तब हो गई जब पेशे से दर्जी बताये गए नौशाद की शादी में नौशाद की ही फिल्म की धुनें बैंड वालों ने बजाई.

नौशाद की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वे शास्त्रीय रागों को श्रोताओं के लिये सरल और मधुर रूप में प्रस्तुत करते थे . उनके राग आधारित फ़िल्मी गीत जैसे मन तड़पत हरि दर्शन को आज (बैजू बावरा), मोहे पनघट पे नंदलाल (मुग़ल-ए-आज़म), तू गंगा की मौज (बैजू बावरा) आदि इस बात का प्रमाण हैं कि फिल्मों में शुद्ध शास्त्रीयता भी लोकप्रिय हो सकती है. साथ ही उन्होंने भारतीय लोकसंगीत अवधी, ब्रज, राजस्थानी और पंजाबी रंग को भी अपने संगीत में खूबसूरती से पिरोया, फ़िल्म गंगा जमुना का गीत नैन लड़ जाइहें , अवधी लोक गीतों का उत्कृष्ट उदाहरण हैं. वो ऐसे संगीतकार थे जिन्होंने फिल्मों में कोरस और पश्चिमी वाद्ययंत्रों का प्रयोग करते हुए भी संगीत की भारतीयता की आत्मा को बनाए रखा. नौशाद के संगीत से सजी कुछ कालजयी फिल्में हैं, बैजू बावरा, अंदाज़, अनमोल घड़ी, मुग़ल-ए आज़म,शाहजहां, अनोखी अदा, मदर इंडिया,अमर, दीदार, दर्द, गंगा जमुना, कोहिनूर, पाक़ीज़ा (संगीतकार गुलाम मोहम्मद के साथ संयुक्त रूप से), सन ऑफ़ इंडिया, संघर्ष, आन, दिल्लगी, आदमी, लीडर, दुलारी,

राम श्याम, मेरे महबूब, बाबुल, साथी, धर्म कांटा आदि. इन फिल्मों का संगीत आज भी उतना ही जीवंत है जितना अपने समय में था, खासकर फ़िल्म बैजू बावरा , मुगल-ए-आज़म और मदर इंडिया हिंदी सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर हैं .

फ़िल्म बैजू बावरा में रागों का शुद्ध प्रयोग, राग मालकौंस, दरबारी, भीमपलासी—फ़िल्म संगीत को नई ऊँचाई देता है. इस फिल्म के गीत पं. डी. वी. पलुस्कर और उस्ताद अमीर ख़ाँ जैसे दिग्गजों ने गाए हैं, इसी प्रकार मुग़ल-ए-आज़म का संगीत भारतीय फ़िल्मी संगीत की अमूल्य धरोहर हैं. प्यार किया तो डरना क्या , मोहे पनघट पे , तेरी महफ़िल में क़िस्मत , हर गीत में शास्त्रीयता,भव्यता और लोकप्रियता का अद्भुत संगम है. इसी प्रकार दुनिया में हम आए हैं तो जीना ही पड़ेगा , ओ गाड़ीवाले गाड़ी धीरे हांक रे , होली आई रे कन्हाई जैसे लोकप्रिय गीतों वाली फ़िल्म मदर इंडिया के संगीत में भारतीय ग्रामीण परिवेश की झलक साफ महसूस होती है. लोक संगीत का स्पर्श और शास्त्रीयता का मिश्रण इसे एक अद्भुत रूप देता है.

1960 के बाद जब फ़िल्म संगीत में पश्चिमी संगीत का प्रभाव बढा, नौशाद तब भी अपने मूल सिद्धांतों पर अडिग रहे. यही कारण है कि उनका फ़िल्म संगीत धीरे धीरे कम होता गया , पर उन्होने न तो क़ोई समझौता किया और न ही अपने संगीत का स्तर कभी गिरने दिया. काफ़ी अंतराल के बाद वर्ष 2006 में आई उनकी संगीत बद्ध फ़िल्म ताजमहल : अन इटरनल लव स्टोरी यद्यपि फ्लॉप हुई पर तब भी उन्होंने सिद्ध किया कि उनका जादू अभी चुका नहीं है . नौशाद ने अपने करियर में सिर्फ 67 फिल्मों में संगीत दिया, लेकिन उनका संगीत इतना प्रभावशाली था कि उनकी 26 फिल्मों ने सिल्वर जुबली मनाई, उनकी 8 फिल्मों ने गोल्डन जुबली मनाई और 3 फिल्मों नें डायमंड जुबली मनाई. फ़िल्म व्यवसायिक रूप से हिट हो या फ्लॉप, संगीत की दृष्टि से उनकी तक़रीबन हर फ़िल्म हिट रही, उल्लेखनीय है कि ऑस्कर में भारत की तरफ से भेजी जानी वाली पहली फिल्म मदर इंडिया का संगीत भी नौशाद साहब ने ही दिया था. उन्होंने छोटे पर्दे के लिए द सोर्ड ऑफ टीपू सुल्तान और अकबर द ग्रेट जैसे धारावाहिकों में भी संगीत दिया.

यूँ तो नौशाद साहब ने कई महान गायकों व गीतकारों के साथ काम किया पर विशेष रूप से, गायकों में मोहम्मद रफ़ी व लता मंगेशकर के साथ और गीतकारों में शकील बदायूंनी के साथ मिलकर सबसे ज्यादा अमर गीत रचे .यह बात कम लोग जानते हैं कि नौशाद साहब एक अच्छे शायर भी थे और उनका दीवान आठवां सुर नाम से प्रकाशित हुआ था व इसका म्यूजिक एल्बम भी जारी हुआ था. अपने प्रिय गायक मोहम्मद रफ़ी के बारे में उन्होंने लिखा था,

गायकी है हुस्न-ए-फ़न तेरा रफ़ी
तेरे फ़न पे हम सभी को नाज़ है
मेरी सरगम में भी तेरा जिक्र है
मेरे गीतों में भी तेरी आवाज है
गूंजते हैं तेरे नग़मों से अमीरी के महल
झोपड़ी में भी ग़रीबों के तेरी आवाज है
अपनी मौसीक़ी पे सबको फ़ख़्र होता है मगर
मेरे साथी आज मौसीक़ी को तुझ पर नाज़ है

नौशाद साहब को 1954 में फ़िल्म बैजू बावरा के लिये फ़िल्म फेयर पुरस्कार से नवाज़ा गया, साथ ही संगीत में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिये उन्हें भारत सरकार द्वारा दादा साहेब फाल्के पुरस्कार एवं पद्म भूषण भी प्रदान किया गया . नौशाद साहब सिर्फ एक फ़िल्मी संगीतकार नहीं थे वो भारतीय संस्कृति एवं संगीत की परंपरा के सच्चे दूत थे उनका संगीत आने वाले कई युगों तक संगीत प्रेमियों के दिल में समाया रहेगा, कार्य के प्रति उनका समर्पण उन्हीं की लिखी इन पंक्तियों से प्रकट होता है,

प्यास मेरी जो बुझ गयी होती,
ज़िन्दगी फिर ना ज़िन्दगी होती

आज के लिये इतना ही, अगले हफ्ते फिर मुलाक़ात होगी. तब तक नौशाद साहब का अमर संगीत सुनें और आनंदित रहें .

संदीपा धर ने लाल ड्रेस में बढ़ाया ग्लैमर का पारा

बोल्ड रेड ड्रेस में नजर आईं संदीपा धर ने ग्लैमर, कॉन्फिडेंस और अट्रैक्शन का ऐसा परफेक्ट मेल पेश किया कि फैशन लवर्स और फैंस दोनों ही प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके.

अभिनेत्री संदीपा धर जानती हैं कि स्टाइल स्टेटमेंट कैसे बनाया जाता है, और उनकी हालिया अपीयरेंस इस बात का शानदार सबूत है.रेड एन्सेंबल का डेरिंग सिलुएट और स्ट्रैटेजिक कट-आउट्स संदीपा की टोंड फिगर को खूबसूरती से कॉम्प्लीमेंट करते हैं. हाल्टर नेकलाइन उनके कॉलरबोन्स और शोल्डर्स को हाइलाइट करती है, जबकि फिगर-हगिंग फिट उनकी कर्व्स को एलिगेंट और सेंसुअस अंदाज़ में उभारता है. थाई-हाई स्लिट लुक में ड्रामैटिक टच जोड़ता है, जिससे यह आउटफिट सोफिस्टिकेशन और बोल्ड हॉटनेस के बीच बेहतरीन बैलेंस बनाता है.

इस लुक को खास बनाती है संदीपा का इसे कैरी करने का अंदाज़. उनका कॉन्फिडेंट पॉश्चर, फ्लुइड पोज़ और सहज ग्रेस इस ड्रेस को सिर्फ फैशन चॉइस नहीं, बल्कि एक पावरफुल स्टाइल स्टेटमेंट बना देते हैं. कंधों पर गिरती सॉफ्ट वेव्स और मिनिमल मेकअप लुक को सटल रखते हुए ड्रेस पर फोकस बनाए रखते हैं, जबकि उनकी ग्लोइंग स्किन और एक्सप्रेसिव आंखें मैग्नेटिक अपील को और बढ़ा देती हैं.

विशेष रूप से अक्सर पैशन और पावर का रंग माना जानेवाला लाल रंग ऐसा लग रहा है, जैसे वो ख़ास तौर पर संदीपा धर के लिए ही बना हो. यह शेड उनके कॉम्प्लेक्शन को न सिर्फ खूबसूरती से निखार रहा है, बल्कि उनकी बोल्ड ऑन-स्क्रीन पर्सनैलिटी को और भी उभार रहा है, जिससे यह लुक एक साथ फियरी और रिफाइंड नजर आ रहा है. संदीपा धर अपने अपीयरेंस से यह भी साबित कर रही हैं कि सच्चा स्टाइल सिर्फ पहनावे में नहीं, बल्कि उसे निभाने के अंदाज़ में होता है.

फिल्म नागबंधन में पार्वती बनीं नाभा नतेश

अभिनेत्री नाभा नतेश फिल्म नागबंधन में पार्वती के किरदार में नजर आयेंगी. मेकर्स ने कल आने वाली फिल्म का एक पोस्टर शेयर कर दर्शकों की उत्सुकता बढ़ा दी थी, जिसमें बस एक छोटी सी झलक दिखाई गई थी.

इस पोस्टर ने सबको पार्वती की पहचान को लेकर सोच में डाल दिया था, साथ ही आज रिवील करने का वादा भी किया गया था. अब आखिरकार इंतज़ार खत्म हो गया है और पार्वती से पर्दा उठ चुका है. फिल्म नागबंधन में पार्वती के किरदार में नाभा नतेश को पेश किया गया है, और इसके साथ मेकर्स ने उनका बेहद खूबसूरत पोस्टर भी रिलीज़ कर दिया है.

सोशल मीडिया पर मेकर्स ने पार्वती के रोल में नाभा नतेश को रिवील किया. वह ट्रेडिशनल इंडियन साड़ी में बेहद स्टनिंग और अट्रैक्टिव लग रही हैं, जो पूरी तरह से एलिगेंस और ग्रेस दिखा रही हैं. पार्वती को रिवील करने के साथ-साथ मेकर्स ने फिल्म का टाइटल, नागबंधम भी रिवील किया और कैप्शन लिखा, 'रहस्यों से भरी दुनिया में, उसका विश्वास ही उसकी किस्मत बन जाता है 'नागबंधम से पार्वती के रूप में खूबसूरत नाभा नतेश को पेश करते हुए.इस गर्मी में पैन-इंडिया सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी.. !!

नागबंधन के पोस्टर में पार्वती के रूप में ग्रेसफुल नजर आ रहीं नाभा नतेश सिर्फ किरदार ही नहीं, बल्कि एक ऐसी फिल्म का वादा भी करती हैं जो भारतीय संस्कृति में गहराई से रची-बसी है. पार्वती की उंगली पर बैठा खूबसूरत पक्षी एक सरप्राइज़ एलिमेंट जोड़ता है, वहीं बैकग्राउंड में मोर और मंदिर का माहौल इस बात का भरोसा दिलाता है कि कहानी भारत की समृद्ध संस्कृति और विरासत से जुड़े एक अलग ही आयाम को छुएगी.

फिल्म नागबंधन की कहानी, स्क्रीनप्ले और निर्देशन अभिषेक नामा ने संभाला है. फिल्म को किशोर अन्नापुरेड्डी और निशिता नागीरेड्डी प्रोड्यूस कर रहे हैं, और इसे समर 2026 में पैन-इंडिया रिलीज़ करने की योजना है.

छोटी बहन नूपुर की विदाई पर छलके कृति सेनन के आंसू

बॉलीवुड अभिनेत्री कृति सेनन की बहन नूपुर सेनन हाल ही में शादी के बंधन में बंध गईं. नूपुर की शादी न सिर्फ उनके परिवार के लिए बल्कि कृति के लिए भी बेहद भावुक पल लेकर आई. बहन की शादी के बाद कृति सेनन ने सोशल मीडिया पर एक इमोशनल पोस्ट शेयर किया, जिसने फैंस का दिल छू लिया. अपनी भावनाओं को शब्दों में बयां करते हुए कृति ने बताया कि भले ही नूपुर का नया घर सिर्फ 20 मिनट की दूरी पर हो, लेकिन उनके बिना घर पहले जैसा नहीं रहेगा.

कृति ने इंस्टाग्राम पर शादी की खूबसूरत तस्वीरें साझा करते हुए लिखा कि वह अब भी यकीन नहीं कर पा रही हैं कि उनकी छोटी बहन की शादी हो गई है. उन्होंने बचपन की यादों को ताजा करते हुए बताया कि जब वह महज पांच साल की थीं, तब उन्होंने पहली बार नूपुर को गोद में लिया था. उस पल से लेकर आज तक का सफर उनके लिए बेहद खास और भावनात्मक रहा है. कृति ने लिखा कि अपनी बहन को सबसे खूबसूरत दुल्हन के रूप में देखना उनकी जिंदगी के सबसे यादगार पलों में से एक है.पोस्ट में कृति ने नूपुर की खुशी और प्यार भरी जिंदगी की कामना करते हुए कहा कि नूपुर को इतना खुश, प्यार में डूबा और जीवन का नया अध्याय शुरू करते देख उनका दिल गर्व और भावनाओं से भर गया.

फिल्म 'बाबूजी' का फर्स्ट लुक रिलीज

निर्माता रत्नाकर कुमार की फिल्म 'बाबूजी' का फर्स्ट लुक रिलीज हो गया है.

रिचा दीक्षित और अवधेश मिश्रा स्टारर इस फिल्म का फर्स्ट लुक सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है और दर्शकों के बीच कहानी को लेकर जबरदस्त उत्सुकता देखने को मिल रही है. फर्स्ट लुक में अख़बार, अदालत, बेबस पति-पत्नी और एक वकील की झलक दिखाई गई है, जो साफ तौर पर किसी गंभीर, सामाजिक और भावनात्मक कहानी की ओर इशारा करती है. इन दृश्यों से यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि फिल्म में न्याय, रिश्तों और संघर्ष की एक मजबूत कथा देखने को मिलेगी. पोस्टर में रिचा दीक्षित, अवधेश मिश्रा और अनीता रावत की मौजूदगी ने दर्शकों की जिज्ञासा को और बढ़ा दिया है.

निर्माता रत्नाकर कुमार का कहना है कि 'बाबूजी' सिर्फ एक फिल्म नहीं, बल्कि एक ऐसी कहानी है, जिससे दर्शक खुद को जुड़ा हुआ महसूस करेंगे. उन्होंने दावा किया कि ट्रेलर सामने आने के बाद दर्शकों की उत्सुकता और भी ज्यादा बढ़ जाएगी और फिल्म भोजपुरी सिनेमा में अपनी अलग पहचान बनाएगी.

मकर संक्रांति 2026 : जी टीवी कलाकारों ने बिखेरे यादों, पतंगों और नई शुरुआत के रंग

जी टीवी के कलाकार मकर संक्रांति का स्वागत इस बार गर्मजोशी, पुरानी यादों और त्यौहार की खुशियों के साथ करने को तैयार हैं. बचपन के वो दिन याद करते हुए, जब छत पर पतंग उड़ती थी, घर में रिश्तेदार जुटते थे और तिल गुड़ के लड्डू और चिक्की का स्वाद हर तरफ खुशबू बनकर फैल जाता था, कलाकारों ने बताया कि मकर संक्रांति उनके लिए हमेशा साथ बैठने, हंसने और अपनों के करीब होने का त्यौहार रहा है. इस साल शूटिंग की व्यस्तता उन्हें सेट पर जरूर रखेगी, लेकिन मकर संक्रांति की रौनक वही है, जो नई शुरुआत, अच्छी सोच और उम्मीद का एहसास कराती है. इस मौके पर 'जगद्धात्री' की सोनाक्षी बत्रा उर्फ जगद्धात्री, 'वसुधा' के अभिषेक शर्मा उर्फ देव, 'गंगा माई की बेटियां' की शुभांगी लाटकर उर्फ गंगा माई, 'जाने अनजाने हम मिले' की जयती भाटिया उर्फ शारदा, 'सरू' के मोहर मटकर उर्फ सरू, 'तुम से तुम तक' की निहारिका चौकसे उर्फ अनु और 'लक्ष्मी निवास' की अक्षिता मुद्गल उर्फ राधिका ने मकर संक्रांति से जुड़ी अपनी खास यादें साझा कीं और शांति, खुशहाली, प्यार और खुशी की शुभकामनाएं दीं. 'वसुधा' में देव का किरदार निभा रहे अभिषेक शर्मा ने कहा, 'बचपन में मकर संक्रांति का मतलब था मूंगफली, चिक्की और तिल गुड़ के लड्डू. सुबह से शाम तक हम छत पर रहते थे, पतंग उड़ाते थे, हंसते थे और बिना किसी चिंता के त्यौहार मनाते थे. मकर संक्रांति मुझे याद दिलाती है कि हर नई शुरुआत अपने साथ उम्मीद और अच्छी सोच लेकर आती है. जैसे सूरज अपनी दिशा बदलता है, वैसे ही हमें भी नई ऊर्जा, शुक्रिया और विश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए. यह त्यौहार परिवारों को पास लाता है, पुरानी परंपराओं को फिर से जिंदा करता है और माहौल में खुशी भर देता है

कलाकारों ने दिये विंटर फिटनेस टिप्स

सर्दियों की ठिठुरती सुबहें और शूटिंग के पहले कॉल टाइम ऐसे में फिटनेस रूटीन बनाए रखना आसान नहीं होता. इसके बावजूद एण्डटीवी के कलाकार अपने रोज़मर्रा के छोटे-छोटे प्रयासों से खुद को फिट और चुस्तबनाए हुए हैं. ये कलाकार मानते हैं कि भारी वर्कआउट से ज्यादा जरूरी है एक नियमित रूटीन और सक्रिय रहना.

इन कलाकारों में शामिल हैं पारस अरोड़ा ('घरवाली पेड़वाली' में जीतू), सोनल पंवार ('हप्पू की उलटन पलटन' की मलाइका) और आसिफ शेख ('भाबीजी घर पर हैं' के विभूति नारायण मिश्रा). 'घरवाली पेड़वाली' में जीतू का किरदार निभा रहे पारस अरोड़ा कहते हैं, 'सर्दियों में सुबह जल्दी उठना मुश्किल जरूर है, लेकिन जब फिटनेस आदत बन जाती है तो शरीर खुद ही एक्टिव रहना चाहता है. हर दिन जिम जाना मुमकिन नहीं होता, लेकिन मैं रोज़ कम से कम 20 मिनट स्ट्रेचिंग और हल्की कसरत के लिए जरूर निकालता हूँ. पुश-अप्स, स्क्वैट्स और प्लैंक जैसी एक्सरसाइज़ शरीर की जकड़न दूर कर देती हैं. शूटिंग के दौरान भी एक जगह बैठे रहने के बजाय चलते-फिरते रहना मुझे पसंद है और मैं कई बार साथी कलाकारों के साथ मज़ेदार फिटनेस चैलेंज भी करता हूं, जिससे माहौल हल्का और ऊर्जा से भरा रहता है. मेरे लिए फिटनेस सिर्फ शरीर को शेप में रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मन को अच्छा महसूस कराने और लंबे शूटिंग शेड्यूल के लिए खुद को मानसिक रूप से तैयार रखने का ज़रिया भी है.'

तारा सुतारिया से ब्रेकअप की अफवाहों को मिली नई हवा

बॉलीवुड के युवा अभिनेता वीर पहाड़िया और अभिनेत्री तारा सुतारिया इन दिनों अपने रिलेशनशिप को लेकर चर्चा में हैं. दोनों के ब्रेकअप की अफवाहें सोशल मीडिया और मीडिया में जोर पकड़ चुकी हैं. हालांकि, इस संबंध में दोनों की ओर से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है और उन्होंने चुप्पी साध रखी है. इसी बीच वीर पहाड़िया ने अपने इंस्टाग्राम पर एक क्रिप्टिक पोस्ट शेयर किया, जिसने उनके फैंस और मीडिया की निगाहों को अपनी ओर खींच लिया.

वीर के हालिया पोस्ट में उन्होंने अपनी कुछ तस्वीरें साझा कीं और कैप्शन लिखा, 'वक्त बुरा हो या अच्छा, एक ना एक दिन बदलता जरूर है.' इस पोस्ट ने तुरंत ही उनके और तारा सुतारिया के बीच चल रही अफवाहों को हवा दे दी.

नेटिज़न्स इस पोस्ट को लेकर अलग-अलग तरह की प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं. कुछ लोग पूछ रहे हैं कि आखिर क्या हुआ, जबकि कुछ फैंस सोच रहे हैं कि यह लुक या पोस्ट किसी नई फिल्म के प्रमोशन का हिस्सा हो सकता है. वहीं, कई लोग गुजारिश कर रहे हैं कि वीर और तारा फिर से अपने रिश्ते को सुलझाएं. ब्रेकअप की अफवाहों की शुरुआत कुछ दिनों पहले एपी ढिल्लों के मुंबई कॉन्सर्ट से हुई थी. इस कॉन्सर्ट में तारा सुतारिया स्टेज पर सिंगर एपी ढिल्लों के साथ नजर आईं. इस दौरान दोनों के बीच काफी करीबी दिखाई दी, और एपी ढिल्लों ने तारा को किस भी किया.

देश के छोटे शहरों में अपार प्रतिभा मौजूद : सिद्धांत

बॉलीवुड अभिनेता सिद्धांत चतुर्वेदी का कहना है कि देश के छोटे शहरों में अपार प्रतिभा मौजूद है, लेकिन इंडस्ट्री की व्यवस्था और काम करने के तरीकों की वजह से कई लेखक अपनी आवाज़ इंडस्ट्री तक पहुँचा नहीं पाते हैं.

सिद्धांत चतुर्वेदी ने हाल ही में एक पॉडकास्ट के दौरान बॉलीवुड के एक ऐसे मुद्दे पर खुलकर बात की, जिस पर अक्सर पर्दे के पीछे ही चर्चा होती है. सिद्धांत चतुर्वेदी ने छोटे शहरों से आने वाले लेखकों को इंडस्ट्री में मिलने वाली सीमित पहुँच और हिंदी सिनेमा में प्रामाणिक भारतीय कहानियों की कमी पर विशेष ज़ोर दिया.

सिद्धांत ने कहा, 'देश के छोटे शहरों में अपार प्रतिभा मौजूद है, लेकिन इंडस्ट्री की व्यवस्था और काम करने के तरीकों की वजह से कई लेखक अपनी आवाज़ इंडस्ट्री तक पहुँचा ही नहीं पाते.